किशोर बालक एवं बालिकाओं के सामाजिक व्यवहार पर पारिवारिक संबंधों के प्रभाव का अध्ययन

प्राची उपाध्याय*

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र किशोर बालकों के सामाजिक व्यवहार पर पारिवारिक संबंधों के प्रभाव के विषय में अध्ययन किया गया है। साथ ही यह भी देखा गया है कि किशोरों के सामाजिक व्यवहार पर परिवार के संबंधों का कितना प्रभाव पड़ता है। इस हेतु दो तरह के संबंधों वाले परिवार को लिया गया है इन बच्चों पर शोध कार्य किया गया, जिसमें विभिन्न सांख्यिकी विधियों का प्रयोग कर विश्लेषण किया गया। उसके पश्चात् जो निष्कर्ष प्राप्त किये गये इनकी शैक्षिक महत्व के रूप में विस्तृत विवेचना की जा रही है।

प्रस्तावना

प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी समाज में जन्म लेता है तथा मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, समाज द्वारा कुछ विकासात्मक कार्य तथा अधिगम अनुभूतियां प्रत्येक उम्र के लिए निर्धारित की जाती है, जिसे उस आयु के प्रत्येक व्यक्ति को सीखने की प्रत्याशा होती है।

सामान्यतः प्रत्येक समाज अपने सदस्यों से दो चीजें सीखने की उम्मीद जरूर रखता है।

<u>ये दो चीजें हैं –</u>

1. समाजीकृत होने की उम्मीद तथा
2. एक अनुमोदित सामाजिक भूमिका सीखने की उम्मीद

सामाजिक होने की उम्मीद में समाज यह प्रत्याशा करता है कि उसके सदस्य उस व्यवहार को सीखेंगे जिसे समाज उचित व्यवहार कहता है तथा जिसे अनुचित कहता है।

समाज द्वारा मान्य व्यवहार जैसे – सहयोग उदारता, वस्तुओं को बांटने की इच्छा, विचारों का स्वस्थ आदान प्रदान, आत्म विश्वास खेल भावना होना चाहे जीत हो या हार दूसरों का सम्मान करना, वरिष्ठ एवं बड़ों की आज्ञा का पालन, दूसरों का स्वागत, नम्रता गल्ति के लिए अफसोस जताना, शिष्ट शब्दों का प्रयोग जैसे – कृपया, धन्यवाद, सहनशील होना, संवेदनशील व्यवहार करना आदि।

इन सब आदतों के विकास में परिवार की मुख्य भूमिका होती है तथा समाजीकरण का मुख्य एवं स्थायी साधन परिवार ही है।

माता पिता ही बालक के समाजीकरण के प्रथम एजेंट है, वह उन उत्तेजकों पर नियंत्रण रखते हैं जो वांछित प्रतिक्रियाओं को जन्म देते हैं।

<u>बर्गेस एवं लॉक के अनुसार –</u> ''परिवार उन व्यक्तियों का समूह है तो विवाह रक्त या गोद लेने के बंधनों से जुडे हैं, एक गृहस्थी का निर्माण करते है और पति पत्नि, माता पिता, पुत्र और पुत्री भाई और बहन अपने अपने सामाजिक कार्यो से क्रमशः एक दूसरे पर प्रभाव डालते है एवं व्यवहार एवं संबंध रखते हैं सामान्य संस्कृति का निर्माण करते हैं तथा बनाये रखते हैं।''

उद्देश्य

किशोर बालक एवं बालिकाओं के सामाजिक व्यवहार पर उच्च एवं निम्न पारिवारिक संबंधों के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना

किशोर बालक एवं बालिकाओं के सामाजिक व्यवहार पर उच्च एवं निम्न पारिवारिक संबंधों के प्रभाव के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण

स्वतंत्र एवं आश्रित चर के रूप में निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया है।

<u>स्वतंत्र चर–</u> किशोर बालक एवं बालिकाओं के पारिवारिक संबंध।

*सहायक प्राध्यापक, हितकारिणी प्रशिक्षण महाविद्यालय, जबलपुर (मध्य प्रदेश)

स्वतंत्र चर मापने हेतु स्वंय द्वारा निर्मित प्रश्नावली तैयार की गई (पारिवारिक संबंधों के जॉच हेतु)

<u>आश्रित चर –</u> सामाजिक व्यवहार

<u>आश्रित चर मापने हेतु –</u> सामाजिक व्यवहार मापनी (डॉ. अशोक शर्मा, अग्रसेन शिक्षा महाविद्यालय) द्वारा निर्मित प्रयोग की गई।

शोध योजना एवं न्यादर्श

सर्वप्रथम विद्यालयों का चयन करके उसमें से न्यादर्श के रूप में 250 छात्र–छात्राओं का चयन किया गया तत्पश्चात् 250 बच्चों पर पारिवारिक संबंध मापनी की प्रश्नावली दी गई जिसमें से कुल 121 को निम्न एवं उच्च पारिवारिक संबंधों के अनुसार चुना गया।

तालिका क्रमांक 1

क्र.	विद्यालयों के नाम	छात्र	छात्रायें	कुल
1	शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, मेडिकल	50	–	50
2	उच्चतर मा.वि.एम.एल.बी.	–	30	30
3	रानी दुर्गावती शा.उ.मा.वि., गंगा सागर, जबलपुर	–	40	40
4	हितकारिणी उ.मा.वि. कन्या शाला, गढा	–	35	35
5	शा.उ.मा.वि., गढा	55	–	55
6	शा.उ.मा.कन्या शाला, ब्यौहारबाग, जबलपुर	–	40	40

प्रस्तुत शोध कार्य में न्यायादर्श का आधार उद्देश्यानुसार है।

जबलपुर शहर के शासकीय एवं अशासकीय 6 विद्यालयों को लिया गया है। जो संपूर्ण जनसंख्या का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं।

तालिका क्रमांक – 2

क्र.	समूह	df	C.R. का मान	
1	उच्च एवं निम्न पारिवारिक संबंधों वाले छात्र	$(30-1) + (30-1)$ $= 58$	2.00	2.66
2	उच्च एवं निम्न पारिवारिक संबंधों वाली छात्रायें	$(30-1) + (35-1)$ $= 63$	2.00	2.66

स्वतंत्रता के अंश (df) के अनुसार विभिन्न समूहों के मान का .05 तथा .01 स्तर में सार्थक्ता का मान

तालिका क्रमांक – 3

उच्च पारिवारिक संबंधों वाले बालक एवं निम्न पारिवारिक संबंध वाले बालकों के सामाजिक व्यवहार के प्राप्तांकों का $\overline{\chi}$,, σ तथा C.R.

क्र.	समूह	संख्या	$\overline{\chi}$	σ	C.R.
1	उच्च पारिवारिक संबंध वाले बालक	30	110.6	6.57	8.36
2	निम्न पारिवारिक संबंध वाले बालक	30	77.63	21.45	

सार्थक अंतर .01 सार्थक स्तर पर

परिणामों का विश्लेषण

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि उच्च पारिवारिक संबंधों वाले बालकों में एवं निम्न पारिवारिक संबंधों वाले बालकों के सामाजिक व्यवहार के मध्य C.R. 8.6 का है जो कि .01 का सार्थक स्तर के मान से बड़ा पाया गया है।

तालिका क्रमांक – 4

उच्च पारिवारिक संबंधों वाली एवं निम्न पारिवारिक संबंध वाली बालिकाओं के सामाजिक व्यवहार के प्राप्तांकों के मध्यमान प्रमाणिक विचलन तथा C.R.

क्र.	समूह	संख्या	$\bar{\chi}$	σ	C.R.
1	उच्च पारिवारिक संबंध वाली बालिका	30	70.1	11.76	14.32
2	निम्न पारिवारिक संबंध वाली बालिका	35	107.62	8.90	

सार्थक अंतर .01 सार्थक स्तर

तालिका में विदित हो रहा है कि उच्च पारिवारिक संबंध वाली बालिकाओं एवं निम्न पारिवारिक संबंध वाली बालिकाओं के सामाजिक व्यवहार के मध्य का C.R 14.32 है जो कि .01 सार्थक स्तर के मान से बड़ा पाया गया है।

विश्लेषण

उपरोक्त परिणाम से स्पष्ट होता है कि उच्च पारिवारिक संबंधों वाले बालक बालिकायें तथा निम्न पारिवारिक संबंध वाले बालक बालिकाओं के सामाजिक व्यवहार पर उनके पारिवारिक संबंधों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।

निष्कर्ष

उच्च पारिवारिक संबंधों वाले बालक, बालिकाओं तथा निम्न पारिवारिक संबंधों वाले बालक बालिकाओं के सामाजिक व्यवहार के मध्य सार्थक अंतर पाया जाता है।

जहां बच्चों एवं अभिभावकों के संबंध मधुर होते हैं, वहां बालक बालिकाओं का समाज के साथ समायोजन भी उच्च श्रेणी का होता है। अभिभावकों को अपने बालक–बालिकाओं के प्रति ऋणात्मक अभिवृत्ति की अपेक्षा अधिक धनात्मक अभिवृत्ति रखना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ

माथुर एस.एस. ''समाज मनोविज्ञान'' (एकादश संस्करण)

श्रीवास्तव डी.एन. बाल मनोविज्ञान (आठवां संशोधित एवं परिवर्तित संस्करण) पेज–84–85

सिन्हा एस.पी. – ''अभिभावक स्वीकृति/अस्वीकृति का बालक की कुंठा एवं आवश्यकता पर प्रभाव''